E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2019; 1(2): 47-49
Received: 15-05-2019
Accepted: 19-06-2019

राधा खनगवाल
Ex Student of MA-Political Science, (SOL) Delhi University, Delhi, India

Corresponding Author:
राधा खनगवाल
Ex Student of MA-Political Science, (SOL) Delhi University, Delhi, India

बढता नेपोटिज़्म - घटता रोज़गार

राधा खनगवाल

नेपोटिज़्म का तात्पर्य भाई-भतीजावाद, स्वजन पक्षपात, जाती पक्षपात, कुनबापरस्ती, कुल पक्षपात से है। इसकी उत्तपत्ति कैथॉलिक पॉप और बिशप द्वारा अपने परिजनों को उच्च पदों पर आसीन कर देने से हुई। मनुस्मृति में समाज की उत्तपत्ति विष्णु द्वारा माननीय है जिसे चार वर्णो में विभाजित किया गया- प्रथम "ब्राह्मण"(पंडित, विद्वान और शिक्षक)। द्वितिय "क्षत्रीया"(शासक, योद्धा और प्रशासक)। तृतिया "वैश्या"(कृषक और व्यापारी)। चतुर्थ "शूद्रा" (श्रमिक, और सेवाकर्ता)। यह नियम माना जाता था कि ब्राह्मण शिक्षक का पुत्र, ब्राह्मण शिक्षक ही बनेगा तथा शासक का पुत्र शासक ही बनेगा। इन क्रुर्टियो की आलोचना करते हुए डॉ बी. आर. अम्बेडकर कहते हैं:- "हिन्दुओ में इस बात की क्षमता ही नही की वे अपनी जाति से भिन्न अन्य जाति के व्यक्ति के गुणों को सराहें। व्यक्ति के गुणों को तभी सराहना जाता था जब वे अपनी जाती का हो।" ये पता लगता है कि नेपोटिज़्म न केवल भारत का ऐतिहासिक हिस्सा रहा है अपितु वर्तमान में भी युवाओं के लिए एक चुनोती तथा गंभीर समस्याओं के रूप दिखाई देता है और वहीं दूसरी ओर समाज में भ्रष्टाचार, निरंतर बढ़ती बेरोज़गारी, दिन प्रतिदिन बढ़ते अपराध के रूप में और आम लोगो के लिए कठिनाइयां उत्पन करने का कार्य कर रहा हैं। नेपोटिज़्म को चार रूप में ज़्यादा अच्छे से समझा जा सकता है जो निम्नलिखित है:

राजनीतिक नेपोटिज़्म

भारतीय राजनीति में प्रमुख रूप से नेपोटिज़्म देखने को मिलता है। जहां भारत एक लोकतांत्रिक देश होकर भी पूर्ण रूप से लोकतांत्रिक देश न बन सका अपितु राजतन्त्र का देश बना रहा। जहां कई वर्षो तक मुख्य पद पर परिवार का सदस्य ही आसीन किया जाता रहा है। जिसके परिणामस्वरूप देश

उन्नति की ओर अग्रसर न होकर नेपोटिज़्म के जाल में उलझता चला गया। और शिक्षित, योग्य, गुणी व कुशल लोगो को राजनितिक पदों को ग्रहण करने के अवसर नहीं मिले।

मनोरंजनात्मक नेपोटिज़्म

भारतीय सिनेमा के माध्यम से नेपोटिज़्म की जड़े निरंतर मज़बूत होती रही है। कपूर परिवार तथा अन्य अभिनेताओं के द्वारा निरंतर नेपोटिसम का हिस्सा बनते देखा है। एक साधारण व्यक्ति को भारतीय सिनेमा में अपनी पहचान बनाने में, अपने सपनो को पूरा करने में कई वर्ष लग जाते है। वहीं दूसरी ओर नेपोटिज़्म के चलते अभिनेताओं के पुत्र-पुत्री रातों रात मशहूर हो जाते है, समाज में अपनी विशेष पहचान बना लेते हैं। नेपोटिज़्म के परिणामस्वरूप या तो व्यक्ति यहां से जुड़े सपनों का मज़बूरन त्याग कर के अपना पेशा बदल लेते है या फिर हिम्मत हार जाते ह ओर आत्महत्या जैसे कठोर कदम उठा लेते हैं।

सांप्रदायिक नेपोटिज़्म

सांप्रदायिक नेपोटिज़्म निरंतर बढ़ता दिखाई दिया है। जिसमें अपने समुदाय व गुठ को शक्तिशाली बनाने के लिए कई प्रयास किये जाते हैं। जिसके कारण अल्पसंख्यक, निचले समूह के लोगो का निरंतर शोषण होता रहा है। धर्म जो हमे ईश्वर के करीब ले जाने का एकमात्र माध्यम बन सकता है वर्तमान मे इसको एक दरार के रूप में देख सकते हैं जो भारतीयो को बांटने का कार्य करता है, भारतीयों की राष्ट्र के प्रति एकता को नुकसान पहुँचाने का कार्य करता है। नेपोटिज़्म न केवल साधारण व्यक्ति अपितु राष्ट्र के लिए भी एक खतरा बन सकता है। नेपोटिज़्म के चलते देश का विकास तो संभव नही परंतु मानवीय अधिकारों का निरंतर हनन होना अवश्य संभव है।

व्यावसायिक नेपोटिज़्म

व्यावसायिक क्षेत्रों मे नेपोटिज़्म का यूँ तेज़ी से बढ़ना युवाओं के लिए सबसे बड़ी समस्या है। किसी प्रसिद्ध विश्वविद्यालय से शिक्षित होने के पश्चात भी युवाओं के समक्ष बेरोज़गारी की समस्या का सामना करना पड़ रहा हैं। विशेष रूप से बड़ी बड़ी कंपनियों व कार्य क्षेत्रों में नेपोटिज़्म होता हैं जहाँ मुख्य पदों पर परिवार के सदस्यों को ही आसिन किया जाता है ताकि कंपनी पर उनका नियंत्रण कायम रहे।

सुझाव:- हाल फिलहाल एक मुख्य अभिनेता द्वारा अपनी फ़िल्म में संवाद बोला गया:- "राजा का बेटा अब राजा नहीं बनेगा, राजा वही बनेगा जो हकदार होगा।" यह बात सभी के लिए समझना अतिआवश्यक है। और यही उचित है तभी अवसरों में समानता आएगी, गुणी तथा बेरोज़गारो को रोज़गार मिलेगा, गरीबी की समस्या का निवारण हो सकेगा, अपराध कम होंगे, भ्रष्टाचार कम होगा तथा देश विकास की ओर अग्रसर होगा।

निष्कर्ष

अत: बेरोज़गारी एक ऐसी समस्या हैं जो अन्य समस्याओं को जन्म देती हैं जैसे गरीबी, अपराध, भ्रष्टचार, राष्ट्रीयता का विखंडन, मानवीय अधिकारों का हनन इत्यादि है। और बेरोज़गारी की जड़ "नेपोटिज़्म" है। किसी भी तरह से पक्षपात न करके व्यक्ति की गुण, हुनर, योग्यता, कार्य इच्छा, शिक्षा, तजुर्बो तथा कार्य विशेष को महत्व दिया जाना चाहिए तभी नेपोटिज़्म का अंत होगा और प्रत्येक व्यक्ति संपूर्णता से अपने जीवन का आनंद उठा पाएगा। जिस तरह बूंद बूंद से सागर बनता है ठीक उसी तरह एक एक व्यक्ति के प्रयास से नागरिकों में कार्य क्षेत्रों में सफलता बढ़ेगी। व्यक्ति चाहे किसी भी जाति धर्म या संप्रदाय का क्यों न हो उनमें आपसी सम्मान

बढ़ेगा, बंधुत्व की भावना उत्पन होगी आपसी भेदभाव समाप्त होगा।

मूल शब्द*:* पक्षपात, क्रुटियो, कुनबापरस्ती, अग्रसर, विखंडन, आसिन, अल्पसंख्यक, हनन, मानवीय, संपूर्णता, बंधुत्व, निवारण, गरीबी, अपराध, भ्रष्टचार, राष्ट्रीयता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शोध, विचार विमर्श।
2. पुस्तक*:* आधुनिक भारत का राजनीतिक चिंतन*:* एक विमर्श- रुचि त्यागी।
3. Across India, Nepotism as a Way of Life- Manu Joseph.